Dr. Sunil Kr. Suman
Assistant Professor (Guest)
Dept. of Psychology
D.B. college Jaynagar
L.N.M.U. Darbhanga

Study Material
B.A. Part-II (H)
Paper- IV
Date:- 20-08-20

Structuralism.
Contribution of Wundt

वुण्ट का मनोविज्ञान के क्षेत्र में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उन्होंने मनोविज्ञान को क्रमबद्ध एवं एक प्रयोगात्मक विज्ञान (Experimental Science) का दर्जा दिया था। लिपजिग विश्वविद्यालय के मनोवैज्ञानिक प्रयोगशाला में वुण्ट तथा उनके शिष्यों द्वारा जितने भी कार्य किये गये, इस प्रयोगशाला में किये गये सभी कार्य एक विशेष जरनल जिसे वुण्ट ने 1881 में संस्थापित किया था, इस जरनल का नाम था- (Philosophische Studien) और 1881 से 1903 तक इस जरनल में करीब एक सौ शोध पत्र प्रकाशित हो चुका था जो सभी लिपजिग प्रयोगशाला में कार्यों पर आधारित था।

लिपजीग प्रयोगशाला में वुण्ट तथा उनके शिष्यों द्वारा किए गए कार्यों को छः भागों बाँटा गया है

(1) संवेदन तथा प्रत्यक्षण प्रयोग (Sensation and Perception Experiments)
(2) प्रतिक्रिया समय प्रयोग (Reaction time experiments)
(3) साहचर्य प्रयोग (Association Experiments)
(4) ध्यान प्रयोग (Attention Experiments)
(5) भाव प्रयोग (Feeling Experiments)
(6) मनोभौतिकी प्रयोग (Psychological Experiments)

(1) संवेदन तथा प्रत्यक्षण प्रयोग (Sensation and Perception Experiments):- वुण्ट तथा उनके शिष्यों द्वारा

Scanned with CamScanner

संवेदन तथा प्रत्यक्षण प्रयोग के क्षेत्र में महत्वपूर्ण कार्य किये गए सबसे अधिक कार्य दृष्टि (vision) के क्षेत्र में किया गया। दृष्टि प्रत्यक्षण में रंग विभेद (colour discrimination), रंग मिश्रण (colour mixing), वर्णान्धता (colour blindness), दृष्टि विरोध (visual contrast), उत्तर-प्रतिमा (after image), आकार का प्रत्यक्षण, द्विनेत्री दृष्टि (binocular vision) तथा दृष्टि भ्रम (optical illusion) आदि पर महत्वपूर्ण कार्य किए गए। श्रवण प्रत्यक्षण के क्षेत्र में ताल (beats), स्वर मिश्रण (tonal fusion) तथा समय अंतरालों का विश्लेषण प्रमुख था। स्पर्श प्रत्यक्षण (touch ~~beats~~ perception) के स्रोत में स्पर्श निरूपन (Touch localization) की समस्याएं तथा द्विबिन्दु देहली (two point ~~perception~~ threshold) का अध्ययन मुख्य रूप से किया गया। समय प्रत्यक्षण (perception of time) के क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण अध्ययन किया गया। विभिन्न समय अंतरालों (time-intervals) के आकलन की समस्या का प्रयोगात्मक अध्ययन किया गया। इस तरह से संवेदन एवं प्रत्यक्षण का क्षेत्र प्रयोगात्मक शोधों का केन्द्र-बिन्दु था। टिंकर (Tinker, 1980) के अनुसार वुण्ट के दिशा निर्देश में जमा किये 186 पी-एच.डी. शोध प्रबंधों (Ph.D. dissertations) का 70% शोध प्रबन्ध संवेदन एवं प्रत्यक्षण के क्षेत्र में था।

(8) प्रतिक्रिया समय का प्रयोग (Reaction time experiments) :- प्रतिक्रिया समय प्रयोग की व्युत्पत्ति (derivation) अंशतः हेल्महोल्ज (Helmholtz) तथा डोंडर्स (Donders) के प्रयोगात्मक अध्ययनों से तथा अंशतः खगोलीय प्रेक्षणों (astronomical observation) व्यक्तिगत त्रुटि (personal equations) की समस्या से उत्पन्न हुई। प्रतिक्रिया समय प्रयोग को वुण्ट इसलिए महत्वपूर्ण मानते थे क्योंकि इनके द्वारा उद्दीपक (stimulus) तथा अनुक्रिया (response) के बीच तीन संभावित चरणों (postulated stages) अर्थात प्रत्यक्षण - संप्रत्यक्षण - इच्छा (perception - apperception - will) का सत्यापन हो पाता था।

Scanned with CamScanner

प्रतिक्रिया समय के तीनों प्रकारों पर प्रयोग किया गया। सरल प्रतिक्रिया समय (Simple Reaction time) प्रयोग में प्रयोज्य उपस्थित किए गए उद्दीपक (Stimulus) को देखते ही जल्द से जल्द अनुक्रिया करता था। विभेद प्रतिक्रिया समय (discrimination Reaction time) में प्रयोज्य एक उद्दीपक (जैसे- हरा रोशनी) के प्रति अनुक्रिया करता था, परन्तु दूसरा उद्दीपक (लाल रोशनी के) प्रति अनुक्रिया नहीं करता था। चयन प्रतिक्रिया समय (choice reaction time) प्रयोग में एक उद्दीपक (जैसे- हरा रोशनी) के प्रति दायाँ हाथ से तथा दूसरा उद्दीपक लाल रोशनी के प्रति बाँए हाथ से अनुक्रिया करने का अनुरोध प्रयोज्य से किया जाता था। वुण्ट ने यह दिखाने की कोशिश किया की जटिल प्रत्यक्षणात्मक परिस्थिति में, जटिल प्रतिक्रिया समय के समान ही पहले व्यक्ति उद्दीपक का प्रत्यक्षण करता है (प्रथम चरण) तब वह उस उद्दीपक का संप्रत्यक्षण (apperceive) करता है। अर्थात लाल और हरा के बीच अन्तर करता है (दूसरा चरण) तथा अन्त में निर्देशानुसार वह अनुक्रिया करता है (तीसरा चरण)। लेकिन बाद के प्रयोग से यह स्पष्ट हो गया की प्रशिक्षित प्रयोज्यों द्वारा इन तीनों चरणों में अन्तर करना संभव नहीं हो पाया।

लिपजीग प्रयोगशाला में बाद में ऐसा कई प्रयोग हुआ जिसमें यह देखने की कोशिश की गई जब प्रयोज्यों को उद्दीपक (Stimulus) पर ध्यान देते हुए अनुक्रिया करने के लिए कहा जाता है (संवेदी प्रतिक्रिया समय = Sensorial Reaction time) और जब उन्हें अंगुली की गति पर ध्यान देते हुए अनुक्रिया करने को कहा जाता है (पेशीय प्रतिक्रिया समय = muscular Reaction time) तो इन दोनों परिस्थिति में किस परिस्थिति में प्रतिक्रिया समय कम होता है। वुण्ट के प्रयोगों का सामान्य निष्कर्ष यह था कि पेशीय प्रतिक्रिया समय संवेदी प्रतिक्रिया समय से छोटा होता है। बाद में उन्हें उद्दीपन के संप्रत्यक्षण (apperception) लगे समय का मापन करने की भी कोशिश की हलाँकी उनका यह प्रयास उन्हीं के

P.T.O.

शिष्य कुल्पे (Kulpe) की कोशिश से बहुत हद तक नाकामयाब रही। इसके बावजूद प्रतिक्रिया समय प्रयोगों द्वारा दिए गए उद्दीपक के प्रतिक्रिया अनुक्रिया करने में व्यक्तियों की विभिन्नता पर पर्याप्त प्रकाश डाला पड़ता है।

(3) साहचर्य प्रयोग (Association experiments):-

वुण्ट के पहले साहचर्य पर कई तरह के शोध हो चुका है और वे उससे काफी प्रभावित भी थे। वे शब्द साहचर्य (word association) पर कई प्रयोग किये। इन प्रयोगों में प्रयोज्य को एक उद्दीपक (Stimulus) इस अनुरोध के साथ दिया जाता था कि उसे सुनकर उसके मन में आने वाला पहला शब्द को वे बतलावें। वे शब्द उद्दीपक तथा उसके प्रति अनुक्रिया करने तक बीत समय का भी मापण करने का कोशिश किया। इन प्रयोगों के आधार पर वे इस निष्कर्ष पर पहुँचे की साहचर्य दो प्रकार के होते हैं:- आन्तरिक साहचर्य ~~और बाह्य साहचर्य~~ (Inner association) तथा बाह्य साहचर्य (Outer association)। आन्तरिक साहचर्य से तात्पर्य शब्दों के बीच तात्विक संबंध (Intrinsic relation) से होता है। जैसे टेबुल-कुर्सी, शिक्षक-छात्र, पुरुष-स्त्री आदि आन्तरिक साहचर्य के उदाहरण है। बाह्य साहचर्य (Outer association) से तात्पर्य वैसे साहचर्य से होता है जिनकी प्रकृति आकस्मिक (accidental) होती है और इस तरह के साहचर्य का निर्माण मूलतः व्यक्ति के आदतों द्वारा होता है। जैसे - 'राजा-महल', 'अतिथि घर' बाह्य साहचर्य के कुछ उदाहरण हैं।

Next class

Scanned with CamScanner